UNIT – 2

संस्थागत सुधार (INSTITUTIONAL REFORMS)

परिभाषा

कृषि क्षेत्र में संस्थागत सुधार से तात्पर्य ऐसे नीतिगत और संरचनात्मक बदलावों से है, जो कृषि उत्पादकता, किसानों की आय और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए किए जाते हैं। ये सुधार सरकारी नीतियों, भूमि सुधार, कृषि ऋण, बाजार पहुंच और तकनीकी उन्नयन से संबंधित होते हैं।

1. भूमि सुधार (Land Reforms)-

- जमींदारी उन्मूलन (Abolition of Zamindari)- **स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा को समाप्त करके भूमि सीधे किसानों को दी गई।**

- भूमि हदबंदी (Land Ceiling)- **एक व्यक्ति के पास अधिकतम भूमि सीमा तय की गई ताकि जमीन का समान वितरण हो सके।**

- टेनेंसी सुधार (Tenancy Reforms)- **काश्तकारों को सुरक्षा प्रदान की गई और उन्हें भूमि का मालिकाना हक दिया गया।**

2. कृषि ऋण एवं वित्त (Agricultural Credit & Finance)-

- सहकारी समितियाँ (Cooperative Societies)- **किसानों को सस्ते ऋण उपलब्ध कराने के लिए सहकारी बैंकों और क्रेडिट सोसाइटियों का गठन किया गया।**

- किसान क्रेडिट कार्ड (Kisan Credit Card – KCC)- **किसानों को आसानी से ऋण उपलब्ध कराने की योजना।**

3. बाजार सुधार (Market Reforms)-

- APMC (Agricultural Produce Market Committee) **एक्ट- कृषि उपज को सीधे बाजार में बेचने की अनुमति दी गई।**

- e-NAM (National Agricultural Market)- **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों को राष्ट्रीय बाजार से जोड़ा गया।**

4. सरकारी योजनाएँ (Government Schemes)-

- **हरित क्रांति (**Green Revolution)- **उच्च उत्पादकता वाले बीज, रासायनिक उर्वरक और सिंचाई सुविधाओं को बढ़ावा दिया गया।**

- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (**PM-KISAN)- **छोटे किसानों को सीधे आय सहायता प्रदान की जाती है।**

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- भारतीय कृषि में संस्थागत सुधारों के महत्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर (संकेत)-

संस्थागत सुधार कृषि क्षेत्र में उत्पादकता और किसान कल्याण को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। भूमि सुधारों ने जमींदारी प्रथा को समाप्त करके छोटे किसानों को भूमि का अधिकार दिया, जिससे सामाजिक न्याय को बल मिला। कृषि ऋण सुधारों ने किसानों को सस्ते ऋण उपलब्ध कराए, जिससे वे आधुनिक तकनीक अपना सके। बाजार सुधारों, जैसे e-NAM **और** APMC **एक्ट, ने किसानों को बिचौलियों से मुक्त करके बेहतर मूल्य दिलाने में मदद की। सरकारी योजनाएँ, जैसे हरित क्रांति और** PM-KISAN, **ने कृषि उत्पादन और किसान आय में वृद्धि की। इन सुधारों के बावजूद, चुनौतियाँ जैसे छोटे जोत, ऋणग्रस्तता और जलवायु परिवर्तन बनी हुई हैं, जिनके समाधान के लिए निरंतर सुधार आवश्यक हैं।**

प्रौद्योगिकीय परिवर्तन (TECHNOLOGICAL CHANGE IN AGRICULTURE)

परिभाषा-

कृषि में प्रौद्योगिकीय परिवर्तन से तात्पर्य नई तकनीकों, उपकरणों और वैज्ञानिक तरीकों के उपयोग से उत्पादकता, दक्षता और किसानों की आय में वृद्धि करने से है। यह परिवर्तन यंत्रीकरण, जैव-प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी और सिंचाई प्रबंधन से जुड़ा है।

प्रमुख प्रौद्योगिकीय परिवर्तन-

1. हरित क्रांति (Green Revolution – 1960s)-

- उच्च उपज वाले बीज (HYV Seeds)- गेहूँ और चावल की नई किस्में (जैसे IR8 चावल, सोनोरा गेहूँ)।

- रासायनिक उर्वरक एवं सिंचाई- रासायनिक खाद (यूरिया, DAP) और नलकूपों का व्यापक उपयोग।

- परिणाम- खाद्यान्न उत्पादन में भारी वृद्धि, लेकिन जलस्तर में गिरावट और मृदा स्वास्थ्य पर प्रभाव।

2. यंत्रीकरण (Mechanization)-

- ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, ड्रिप सिंचाई- श्रम की बचत और उत्पादकता में वृद्धि।

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)- सूक्ष्म सिंचाई को प्रोत्साहन।

3. जैव-प्रौद्योगिकी (Biotechnology)-

- Bt कपास (2002)- कीट प्रतिरोधी फसल, उत्पादन में वृद्धि।

- जीन-संपादित फसलें (GM Crops)- शोध जारी, लेकिन पर्यावरणीय चिंताएँ।

4. डिजिटल कृषि (Digital Agriculture)-

- e-NAM, किसान ऐप्स- बाजार तक पहुँच और मौसम पूर्वानुमान।

- ड्रोन तकनीक (2020s)- फसल निगरानी, कीटनाशक छिड़काव।

5. जैविक खेती (Organic Farming)-

- परंपरागत तरीकों का पुनरुद्धार- रासायनिक मुक्त खेती, जैसे सिक्किम (भारत का पहला जैविक राज्य)।

प्रैक्टिस प्रश्न (**Practice Question**)

प्रश्न- "भारतीय कृषि में प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के प्रभावों की व्याख्या करें।" (अधिकतम 200 शब्द)

उत्तर (संकेत)-

प्रौद्योगिकीय परिवर्तन ने भारतीय कृषि को गुणात्मक रूप से बदल दिया है। हरित क्रांति के माध्यम से उच्च उपज वाले बीजों और रासायनिक उर्वरकों ने 1960-70 के दशक में खाद्यान्न संकट को दूर किया, लेकिन इससे जल संकट और मृदा अवनयन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुईं। यंत्रीकरण (जैसे ट्रैक्टर, ड्रिप सिंचाई) ने श्रमिकों की कमी को पूरा किया, लेकिन छोटे किसानों के लिए यह महँगा साबित हुआ। जैव-प्रौद्योगिकी (Bt कपास) ने उत्पादन बढ़ाया, परंतु इस पर कीटनाशकों की निर्भरता बढ़ी। डिजिटल तकनीकों (e-NAM, ड्रोन) ने बाजार पहुँच और दक्षता में सुधार किया है। भविष्य में टिकाऊ प्रौद्योगिकियाँ (जैविक खेती, जल संरक्षण) अपनाने की आवश्यकता है ताकि पर्यावरणीय नुकसान के बिना कृषि विकास हो सके।

व्यापार की शर्तें (Terms of Trade Between Agriculture and Industry)

परिभाषा-

कृषि और उद्योग के बीच व्यापार की शर्तें (Terms of Trade - ToT) से तात्पर्य उस अनुपात से है जिस पर कृषि उत्पादों को औद्योगिक वस्तुओं के साथ विनिमय किया जाता है। यह किसानों की क्रय शक्ति और आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

सूत्र-

$$\text{ToT} = \left(\frac{\text{कृषि उत्पादों का कीमत सूचकांक}}{\text{औद्योगिक वस्तुओं की कीमत सूचकांक}} \right) \times 100$$

- **अनुकूल** ToT (>100)- **कृषि उत्पादों की तुलना में औद्योगिक वस्तुएँ सस्ती।**

- **प्रतिकूल** ToT (<100)- **औद्योगिक वस्तुएँ महँगी होने से किसानों को नुकसान।**

भारत में ToT का ऐतिहासिक रुझान

1. प्रारंभिक दशक (1950-60)-

- **औद्योगीकरण पर जोर → कृषि उत्पादों की कीमतें कम रखी गईं (प्रतिकूल** ToT)।

- **कारण- भारी उद्योगों को सस्ता कच्चा माल उपलब्ध कराना।**

2. हरित क्रांति के बाद (1970-80)-

- MSP **और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (**PDS) **से** ToT **में सुधार।**

- किसानों को उर्वरक, बिजली पर सब्सिडी → आंशिक राहत।

3. उदारीकरण के बाद (1991 के बाद)-

- निर्यात नीतियों ने कुछ फसलों (गन्ना, कपास) के ToT को सुधारा।

- लेकिन, डीजल, कीटनाशकों की बढ़ती कीमतों ने दबाव बनाए रखा।

4. वर्तमान चुनौतियाँ (2000 के बाद)-

- MSP पर निर्भरता के बावजूद, कृषि लागत (बीज, ऋण) बढ़ी।

- औद्योगिक उत्पाद (ट्रैक्टर, उर्वरक) महँगे → ToT प्रतिकूल।

ToT को प्रभावित करने वाले कारक

1. सरकारी नीतियाँ- MSP, निर्यात प्रतिबंध।

2. माँग-आपूर्ति- शहरीकरण से खाद्य माँग बढ़ी, लेकिन उत्पादकता सीमित।

3. मुद्रास्फीति- औद्योगिक वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ती हैं।

4. वैश्विक बाजार- आयातित उर्वरकों और तेल की कीमतें।

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- "भारत में कृषि और उद्योग के बीच व्यापार की शर्तें (ToT) किसानों के हित में क्यों नहीं हैं? समझाइए।" (अधिकतम 200 शब्द)

उत्तर (संकेत)-

भारत में ToT प्रतिकूल रहा है क्योंकि औद्योगिक वस्तुओं (जैसे उर्वरक, ट्रैक्टर) की कीमतें कृषि उत्पादों की तुलना में तेजी से बढ़ती हैं। सरकारी नीतियाँ जैसे MSP केवल कुछ फसलों तक सीमित हैं, जबकि अधिकांश किसानों को बाजार मूल्य पर निर्भर रहना पड़ता है। उदारीकरण के बाद, कृषि लागत (डीजल, बीज) बढ़ी है, लेकिन उत्पादों का मूल्य नहीं। इसके

अलावा, औद्योगिक क्षेत्र को मिलने वाली सब्सिडी (जैसे बिजली) के कारण विनिर्माण लागत कम होती है, जबकि किसानों को पूरी कीमत चुकानी पड़ती है। परिणामस्वरूप, किसानों की आय स्थिर नहीं रह पाती और ToT उनके विरुद्ध बना रहता है। इसे सुधारने के लिए MSP का विस्तार, कृषि अवसंरचना में निवेश और ऋण सुविधाएँ आवश्यक हैं।

कृषि नीति (AGRICULTURAL POLICY)

परिभाषा-

कृषि नीति से तात्पर्य सरकार द्वारा बनाए गए उन नियमों, योजनाओं और विनियमों से है जिनका उद्देश्य कृषि उत्पादन बढ़ाना, किसानों की आय में वृद्धि करना और ग्रामीण विकास को सुनिश्चित करना है।

भारत में कृषि नीति के प्रमुख उद्देश्य-

1. **खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना**
2. **किसानों की आय दोगुनी करना**
3. **कृषि उत्पादकता और दक्षता बढ़ाना**
4. **ग्रामीण रोजगार सृजित करना**
5. **कृषि को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाना**

भारत की प्रमुख कृषि नीतियाँ-

1. हरित क्रांति (1960s)

- **उद्देश्य- खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना**
- **मुख्य तत्व-**
  - **उच्च उपज वाले बीज (HYV)**
  - **रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग**
  - **सिंचाई सुविधाओं का विस्तार**

2. राष्ट्रीय कृषि नीति (2000)

- प्रमुख बिंदु-

  - कृषि विकास दर 4% प्रतिवर्ष करने का लक्ष्य

  - निजी निवेश को प्रोत्साहन

  - बाजार सुधार

3. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN, 2019)

- लाभ- छोटे किसानों को ₹6,000 प्रतिवर्ष की आय सहायता

4. किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना

- उद्देश्य- किसानों को सस्ते ऋण उपलब्ध कराना

5. ई-नाम (e-NAM) पोर्टल

- लाभ- किसानों को राष्ट्रीय बाजार से जोड़ना

वर्तमान चुनौतियाँ-

1. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव
2. किसानों की बढ़ती ऋणग्रस्तता
3. MSP व्यवस्था पर अत्यधिक निर्भरता
4. बाजार तक पहुँच की कमी

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- "भारत की कृषि नीतियाँ किसानों की आय बढ़ाने में किस प्रकार सहायक हैं? संक्षेप में समझाइए।"

उत्तर (संकेत)-

भारत की कृषि नीतियाँ किसानों की आय बढ़ाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती हैं। PM-KISAN जैसी योजनाएँ सीधे नकद हस्तांतरण के माध्यम से किसानों की आय में सहायता करती हैं। MSP व्यवस्था फसलों के लिए न्यूनतम मूल्य सुनिश्चित करके किसानों को शोषण से बचाती है। किसान क्रेडिट कार्ड योजना सस्ते ऋण उपलब्ध कराकर उत्पादन लागत कम करती है। ई-नाम जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को बिचौलियों से मुक्त करके बेहतर मूल्य दिलाने में मदद करते हैं। हालांकि, इन नीतियों की प्रभावशीलता कुछ सीमाओं के कारण कम हो जाती है, जैसे MSP का सीमित दायरा और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव। इन चुनौतियों के बावजूद, सरकार की ये नीतियाँ कृषि क्षेत्र को स्थिरता प्रदान करने और किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सतत कृषि (SUSTAINABLE AGRICULTURE)

परिभाषा-

सतत कृषि से तात्पर्य कृषि की उन विधियों से है जो पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक लाभ और सामाजिक न्याय को संतुलित करते हुए वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।

सतत कृषि की आवश्यकता-

1. **मृदा उर्वरता में गिरावट**
2. **जल संकट**
3. **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव**
4. **रासायनिक उर्वरकों/कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग**

भारत की प्रमुख सतत कृषि नीतियाँ एवं कार्यक्रम-

1. जैविक खेती को बढ़ावा

- **परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)- जैविक खेती हेतु वित्तीय सहायता**
- **सिक्किम- भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य (2016)**

2. जल संरक्षण

- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)- ड्रिप/स्प्रिंकलर सिंचाई को प्रोत्साहन**

- 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप'- जल उपयोग दक्षता बढ़ाना

3. मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन

- मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (2015)- मिट्टी की गुणवत्ता जाँच एवं सिफारिशें

- जीरो बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF)- रासायनिक मुक्त खेती (आंध्र प्रदेश में सफल)

4. जलवायु-स्मार्ट कृषि

- राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA)- संरक्षण कृषि तकनीकों को बढ़ावा

5. फसल विविधीकरण

- मोटे अनाजों को बढ़ावा- बाजरा, रागी (2023 को 'अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष' घोषित)

चुनौतियाँ-

1. छोटे किसानों के लिए प्रौद्योगिकी पहुँच

2. जैविक उत्पादों के लिए बाजार की सीमित उपलब्धता

3. परंपरागत खेती से बदलाव में प्रतिरोध

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- "भारत में सतत कृषि को बढ़ावा देने वाली नीतियों की प्रभावशीलता का विश्लेषण कीजिए।" (अधिकतम 200 शब्द)

उत्तर (संकेत)-

भारत सरकार ने सतत कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियाँ शुरू की हैं। PKVY और मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी योजनाओं ने जैविक खेती और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार किया है। PMKSY ने जल संरक्षण को प्रोत्साहित करके सिंचाई दक्षता बढ़ाई है। ZBNF जैसी पहलों ने छोटे किसानों को कम लागत वाली टिकाऊ खेती की ओर उन्मुख किया है। हालाँकि, इन नीतियों की प्रभावशीलता कुछ सीमाओं के कारण कम हो जाती है। जैविक उत्पादों के लिए बाजार की कमी, किसानों के बीच जागरूकता की कमी और सरकारी योजनाओं का अपर्याप्त क्रियान्वयन प्रमुख चुनौतियाँ हैं। फिर भी, मोटे अनाजों को बढ़ावा देने जैसे हाल के प्रयासों से सतत कृषि को गति मिली है। इन नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए ग्रामीण अवसंरचना विकास और किसान शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है।

कृषि संकट (AGRARIAN CRISIS)

परिभाषा-

कृषि संकट से तात्पर्य भारतीय कृषि क्षेत्र में व्याप्त उन गंभीर समस्याओं से है जो किसानों की आर्थिक स्थिति, कृषि उत्पादकता और ग्रामीण विकास को प्रभावित करती हैं।

कृषि संकट के प्रमुख कारण-

1. आर्थिक कारण

- कम आय एवं उच्च लागत- बढ़ती उत्पादन लागत (बीज, उर्वरक, ऋण) के बावजूद फसल मूल्यों में स्थिरता

- ऋणग्रस्तता- साहूकारों और बैंकों पर निर्भरता → किसान आत्महत्या का प्रमुख कारण

2. संरचनात्मक कारण

- छोटी जोत- 86% किसानों के पास 2 हेक्टेयर से कम जमीन

- सिंचाई सुविधाओं की कमी- 52% खेती अभी भी वर्षा पर निर्भर

3. नीतिगत कारण

- MSP की सीमाएँ- केवल 23 फसलों को कवर, वास्तविक लाभ कुछ राज्यों/फसलों तक

- बाजार तक पहुँच की कमी- APMC मंडियों का एकाधिकार

4. पर्यावरणीय कारण

- मृदा अवनयन- रासायनिक खादों का अत्यधिक प्रयोग

- जलवायु परिवर्तन- अनिश्चित मानसून, सूखा/बाढ़

कृषि संकट के प्रभाव-

1. ग्रामीण पलायन

2. किसान आत्महत्या (2019 में 10,281 मामले)

3. खाद्य सुरक्षा को खतरा

4. कृषि GDP वृद्धि दर में गिरावट

सरकारी प्रयास-

- PM-KISAN- आय सहायता

- किसान क्रेडिट कार्ड- सस्ता ऋण

- कृषि अवसंरचना कोष- 1 लाख करोड़ रुपये

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- "भारत में कृषि संकट के मूल कारणों की व्याख्या करते हुए इसके समाधान हेतु सुझाव दीजिए।" (अधिकतम 200 शब्द)

उत्तर (संकेत)-

भारत में कृषि संकट के मूल कारणों में आर्थिक, संरचनात्मक और नीतिगत समस्याएँ शामिल हैं। छोटी जोत, उच्च उत्पादन लागत और फसल मूल्यों में अस्थिरता ने किसानों को ऋणजाल

में धकेल दिया है। MSP **व्यवस्था की सीमित पहुँच और बाजार संरचना की कमजोरियों ने समस्या को बढ़ाया है।**

समाधान हेतु-

1. **जोत समेकन से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है**
2. **वैकल्पिक रोजगार के अवसर सृजित करने चाहिए**
3. MSP **व्यवस्था का विस्तार और सुधार आवश्यक है**
4. **किसान उत्पादक संघ (**FPO) **को मजबूत कर बाजार पहुँच बढ़ानी चाहिए**
5. **जलवायु-स्मार्ट कृषि तकनीकों को प्रोत्साहित करना चाहिए**

सरकारी योजनाओं के साथ-साथ निजी क्षेत्र की भागीदारी से ही इस संकट का स्थायी समाधान संभव है।

कृषि श्रमिक (AGRICULTURAL LABOUR)

परिभाषा-

कृषि श्रमिक से तात्पर्य उन मजदूरों से है जो कृषि कार्यों में मजदूरी के बदले काम करते हैं और जिनके पास स्वयं की कोई भूमि नहीं होती। भारत में यह वर्ग सबसे कमजोर आर्थिक समूहों में से एक है।

कृषि श्रमिकों की विशेषताएँ-

1. आर्थिक स्थिति-

- **निम्न आय स्तर (प्रतिदिन** 200-300 **रुपये)**
- **मौसमी रोजगार पर निर्भरता**

2. सामाजिक स्थिति-

- **अधिकांश अनुसूचित जाति/जनजाति से संबंधित**
- **अशिक्षा एवं सामाजिक भेदभाव**

3. कार्य परिस्थितियाँ-

- **कोई औपचारिक श्रम कानून लाभ नहीं**
- **लंबे कार्य घंटे (**10-12 **घंटे/दिन)**

कृषि श्रमिकों की समस्याएँ-

1. रोजगार की अनिश्चितता

- **खेती मौसमी होने के कारण वर्ष में केवल** 100-150 **दिन काम मिलना**

2. न्यूनतम मजदूरी का पालन न होना

- अधिकांश राज्यों में निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से कम भुगतान

3. ऋणग्रस्तता

- साहूकारों से उच्च ब्याज दर पर कर्ज लेना

4. सामाजिक सुरक्षा का अभाव

- स्वास्थ्य बीमा, पेंशन जैसी सुविधाओं तक पहुँच न होना

सरकारी पहल-

1. मनरेगा (MGNREGA)- ग्रामीण रोजगार गारंटी
2. प्रधानमंत्री किसान मजदूर योजना- 2 लाख रुपये का बीमा कवर
3. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम- वृद्धावस्था पेंशन

प्रैक्टिस प्रश्न (Practice Question)

प्रश्न- "भारत में कृषि श्रमिकों की दशा सुधारने के लिए कौन-कौन से उपाय किए जाने चाहिए?"

उत्तर (संकेत)-

भारत में कृषि श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए बहु-स्तरीय उपायों की आवश्यकता है। सर्वप्रथम, मनरेगा जैसी योजनाओं को और प्रभावी बनाकर वर्षभर रोजगार सुनिश्चित किया

जाना चाहिए। दूसरा, न्यूनतम मजदूरी कानूनों को सख्ती से लागू करना आवश्यक है। तीसरा, सहकारी समितियों के माध्यम से श्रमिकों को संगठित कर उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ाई जा सकती है। चौथा, कौशल विकास कार्यक्रमों द्वारा गैर-कृषि रोजगार के अवसर सृजित किए जाने चाहिए। पाँचवाँ, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं (स्वास्थ्य बीमा, पेंशन) का विस्तार करना चाहिए। अंत में, भूमि सुधारों द्वारा भूमिहीन श्रमिकों को जोत का अधिकार दिलाने से उनकी स्थिति में स्थायी सुधार आ सकता है। इन उपायों के क्रियान्वयन के लिए सरकार, नागरिक